तृतीयसर्ग: प्रातःकाल होते ही वन्दी गण प्रभात वर्णन एवम् स्तुति-पाठ द्वारा श्री कृष्ण को जगाते हैं। श्रीकृष्ण और बलराम प्रातः क्रियाओं से निवृत्त होकर पुनः मथुरा नगर की ओर प्रस्थान करते हैं। इसी बीच नगर द्वार पर अम्बष्ट कुवलयापीड नामक उन्मत्त हाथी को कृष्ण को मारने के लिए खड़ा कर देता है। लेकिन कृष्ण अम्बष्ट सहित उस पागल हाथी को पछाड़कर आगे बढ़ जाते हैं। आगे बढ़ने पर कंस द्वारा नियुक्त चाणूर और मुष्टिक नामक दो मल्लधारी मिलते हैं। इन दोनों मल्लधारियों को युद्ध में कृष्ण और बलराम मौत का घाट उतार देते हैं।

चतुर्थ सर्ग: जब कंस कृष्ण द्वारा अपने सेवकों को मारे जाने का वृत्तांत सुनता है तो वह आग बबूला हो जाता है। वह स्वयं ही ढाल, तलवार लेकर श्रीकृष्ण की ओर चल देता है तत्क्षण कृष्ण भी खड्ग लेकर आगे बढ़ते हैं। दोनों के बीच युद्ध होता है। कृष्ण उसे पछाड़कर अपने खड्ग से प्राणहीन कर देते हैं। इस प्रकार कृष्ण के पराक्रम को देखकर देवगण प्रसन्न होते हैं और उनके ऊपर दिव्य पुष्पों की वर्षा करते हैं। खुशी के इजहार में दुन्दुभि बजने लगता है और देवगणाएँ देवलोक में नृत्य करने लगती हैं। इससे सारे दिशाओं में हर्ष का लहर दौड़ने लगता है।

श्रीकृष्ण द्वारा कंस की मृत्यु होने की बात सुनकर पृथ्वीलोक की सारी जनता आनन्दित होती है और उन्हें काफी संतोष होता है। तदनन्तर श्री कृष्ण राजा उग्रसेन को कारा से मुक्त कर, उनका राज्याभिषेक करता है। वह उग्रसेन को भोज और अन्धकों का चक्रवर्ती राजा बनाता है। वह अपने माता-पिता देवकी और वसुदेव को वन्दी गृह से मुक्त कराता है। माता-पिता श्री कृष्ण को स्नेह से गद् गद् होकर आशीर्वाद देते हैं। इसी क्रम में अक्रूर कृष्ण की समस्त लीला को स्तुति रूप में वर्णन करते हैं जिसे सुनकर उनके माता-पिता अत्यधिक प्रसन्नता का इजहार करते हैं। अंत में उन दोनों द्वारा अपने लाडले पुत्र श्री कृष्ण को भाव-विह्वल होकर आशीर्वाद दिया जाता है। यहीं पर इस कथा का इतिश्री होता है।

समालोचना:

उक्त खंड काव्य की समीक्षा में कहा गया है कि 'कंसवहो' एक सफल महाकाव्य है। इसमें खण्डकाव्य के समस्त लक्षण विद्यमान हैं। यह काव्य सर्गबद्ध है। यह चार सर्गों में विभाजित है। इसमें श्रीकृष्ण के साथ कंस के भी चरित्र का चित्रण किया गया

भय भी उत्पन्न हो जाता है।

इधर श्री कृष्ण कंस के निमंत्रण को स्वीकार करते हैं और अक्रूर के साथ ही मथुरा जाने का निश्चय करते हैं। तदोपरांत श्री कृष्ण बलराम के साथ रथारूढ़ होकर प्रस्थान करते हैं। जब श्री कृष्ण गोकुल से मथुरा के लिए प्रस्थान करते हैं तो गोपियाँ उन्हें रथारूढ़ देखकर विलाप करने लगती हैं तब अक्रूर उन्हें समझाते हैं कि श्री कृष्ण गोकुल छोड़कर सदा के लिए नहीं जा रहे हैं। ये एक महत्वपूर्ण कार्य-सिद्धि के लिए जा रहे हैं। निःसन्देह कार्य सिद्धि होते ही वे पुनः सकुशल वापस आकर आपलोगों से मिलेंगे। ।

तत्पश्चात् श्री कृष्ण और बलराम अपने परिजनों सहित प्रस्थान करते हैं और चलकर यमुना तट पर पहुँचते हैं। श्री कृष्ण अपने सभी परिजनों के साथ यमुना में स्नान करते हैं। स्नानोपरांत श्री कृष्ण बलराम एवम् समस्त परिजनों सहित मथुरा नगरी में प्रवेश करते हैं।

जब कृष्ण और बलराम राजमार्ग से मथुरा की ओर प्रस्थान करते हैं तो उन्हें रास्ते में कंस का धोबी मिलता है। जब श्री कृष्ण उससे कुछ वस्त्रों की याचना करते हैं तो वह उनके साथ कटु व्यवहार करता है तब वे धोबी को पछाड़ देते हैं जिससे उसका प्राण पखेरू उड़ जाता है।

जब श्री कृष्ण कुछ दूर आगे बढ़ते हैं तो उन्हें कंस की कुब्जा शिल्पकारिका दासी मिलती है जो कंस के लिए केशर चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थों को ले जा रही है। इस क्रम में जब वह श्रीकृष्ण को देखती है तो वह उनके चरणों में विनम्रता पूर्वक केशर चन्दन आदि पदार्थ अर्पित करती है। कृष्ण भी प्रसन्न होकर उस कुब्जा दासी को छूते हुए आशीर्वाद देते हैं जिसके फलस्वरूप उसका कुबड़ापन अपने आप दूर हो जाता है और वह अत्यंत सुन्दर युवती बन जाती है। आगे उस युवती द्वारा कृष्ण से भीक्षा माँगे जाने पर यह कहकर वे टाल देते हैं कि अभी इसके लिए अवकाश नहीं है। फिर आगे देखा जायेगा।

द्वितीय सर्ग: तदनन्तर श्री कृष्ण नगर में प्रविष्ट कर सर्वप्रथम धनुषशाला में पहुँचते हैं और वहाँ रखे हुए धनुष को उठाकर उसे तोड़कर फेंक देते हैं। तत्पश्चात वे मथुरा नगर की शोभा का अवलोकन करने हेतु भ्रमण करते हैं। भ्रमणोपरांत संध्या निकट होते ही वे अपने अतिथि गृह में आकर विश्राम करते हैं।

इकाई-२ खण्ड-काव्यों का सामान्य परिचय

संस्कृत वाङ्मय की भाँति प्राकृत साहित्य में खण्डकाव्यों की रचना हुई है। खण्ड काव्यों की रचना महाराष्ट्री प्राकृत में हुई है।

प्राकृत वाङ्मय में जिन खण्ड काव्यों की रचना हुई है, वे इस प्रकार हैं:— (१) कंसवध (२) उषानिरुद्ध (३) भृङ्गसंदेश।

(1) कंसवहो (कंसवध):

'कंसवहो' महाराष्ट्री प्राकृत भाषा में रचित एक उत्कृष्ट खण्ड काव्य है जो खण्डकाव्यों में प्रमुख है। इसके रचयिता राम पाणिवाद हैं जो संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, न्याय-दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। इनकी कृतियों में 'कंसवहो' को प्रमुख स्थान प्राप्त है।

'कंसवहो' में 'कंसवध' का आख्यान गुम्फित है। इस काव्य का नामकरण प्राकृत के महाकाव्य 'गउडवहो' और संस्कृत के शिशुपाल के आधार पर किया गया है। अतः इसमें 'कंसवध' का प्रमुख घटना होने के कारण ही 'कंसवहो' नाम से अभिहित किया गया है। अतः इस काव्य का नामकरण सार्थक है।

इस काव्य का रचना काल १८वीं शताब्दी है।

कथावस्तु: प्रस्तुत कथानक श्रीमद् भागवत पर आधारित है। यह चार सर्गों में निबद्ध है। इसमें २३३ पद्य हैं। प्रथम चार सर्गों की कथावस्तु निम्न प्रकार है:—

प्रथम सर्ग: कथा का प्रारम्भ मंगलाचरण से होता है। मंगलाचरण के रूप में नाना गुणों से विभूषित अवतारी महापुरुष श्री कृष्ण की स्तुति की जाती है। तदनन्तर जब कंस का दूत गान्दिनी पुत्र अक्रूर मथुरा पहुँचे तो उत्सुक श्री कृष्ण अपने बड़े भाई बलराम के साथ सायंकाल के समय व्रज (गोकुल) में चंक्रमण कर रहे हैं। जब श्रीकृष्ण अक्रूर को देखते हैं तो उनका भव्य स्वागत करते हैं और अक्रूर भी श्रीकृष्ण की भाव-विह्वल होकर स्तुति करते हैं। इस प्रकार दोनों का अपूर्व मिलन होता है। अक्रूर अपनी गोकुल यात्रा के आगमन का कारण बताते हुए दुःखपूर्वक कहते हैं कि हे प्रभु! "मथुरा का राजा कंस आपको छल से मारना चाहता है। इसके लिए वह कूटजाल रच रखा है। इसी उद्देश्य से वह आपको धनुष यज्ञ में भाग लेने हेतु निमंत्रण भेजा है।" इस वृत्तान्त को पास में बैठे श्री बलराम सुनकर बहुत प्रसन्न हो जाते हैं और उनके मन में धनुष यज्ञ देखने का कौतुक उत्पन्न हो जाता है, किन्तु साथ ही कंस के कपट-जाल के कारण उनके मन में

NOTES

Scanned with OKEN Scanner